Que. सामाजिक वर्ग क्या है? जाति और वर्ग में क्या अन्तर है?
What is social class? What is the difference between caste and class?

Ans— व्यक्तियों के एक समूह जो दूसरे समूह की तुलना में श्रेष्ठ या निम्न स्तर का माना जाता है उसे सामाजिक वर्ग कहा जाता है। समाज में वर्ग के स्तर का निर्धारण प्रतिष्ठा के आधार पर किया जाता है, जो परिस्थिति अनुसार परिवर्तित बदलता रहता है। सामाजिक वर्ग की कुछ निम्नलिखित विशेषताएँ हैं —

(1) अपने वर्ग के सदस्यों में समानता की भावना रहती है। वर्ग के सभी सदस्यों में सामाजिक जीवन स्तर समान रहने की अपेक्षा रहती है, उनके आचार-विचार तथा व्यवहार में भी समानता दिखाई पड़ती है। निम्न वर्ग के सदस्यों के प्रति उच्च वर्ग के सदस्यों में हीन भावना तथा निम्न वर्ग के सदस्यों में उच्च वर्ग के प्रति वरिष्ठता की भावना व्याप्त होती है। इस आधार पर वरिष्ठता या हीनता की भावना आधारित होती है।

उच्च एवं निम्न वर्ग भेद के आधार पर सामाजिक वर्ग में वर्ग विभाजन होता है जैसे - शहर और ग्रामीण का, जमींदारों और रैयतों का, अमीरों और गरीबों का, [illegible] इसी आधार पर होता है।

प्रत्येक सामाजिक वर्ग में एक अन्तःसमूह (In group) भी पाया जाता है, अन्तःसमूह के सदस्य उस समूह को अपना समूह समझते हैं और उसी रूप में उसके व्यवहार भी होता है इसलिए अपने ही समूह के लोगों के साथ मिलना-जुलना करते हैं तथा अन्य वर्गों से दूरी की भावना रखते हैं। इस अर्थ में प्रत्येक सामाजिक वर्ग समाज के अन्तर्गत एक लघु समाज होता है।

सामाजिक वर्गों की एक अन्य विशेषता यह है कि यह भी कहा जा सकता है कि

P.T.O

MICO LUBRICANTS

सामाजिक वर्ग में व्यवहार, पारस्परिक सम्बन्ध, पहनावा, आमोद-प्रमोद तथा रहन-सहन का तरीका आदि बदलने से सामाजिक वर्ग अपने सम्बन्धों को परिवर्तित करने के लिए स्वतंत्र होता है।

इसके अतिरिक्त व्यवसाय, राजनीति, सामाजिक स्तरीकरण, धर्म, जाति आदि वर्ग जाति का आधार होते हैं जो इसी जाति का वर्ग के साथ व्यवहार किया करते हैं तथा अपने जीवन को उसी के अनुरूप ढालने का प्रयास करते हैं।

प्रकृति के आधार पर जाति और वर्ग में अन्तर को निम्न रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है।

जाति भी एक प्रकार का वर्ग है किन्तु दोनों की विशेषताएँ अलग-अलग हैं।

(i) वर्ग खुला (Open) होता है पर जाति बन्द (Closed) है। यदि कोई व्यक्ति किसान वर्ग में पैदा हुआ हो तो यह आवश्यक नहीं है कि वह भी किसान ही हो, पर अगर कोई व्यक्ति ब्राह्मण परिवार या कुल में पैदा हुआ हो तो आजीवन ब्राह्मण जाति का ही कहलाएगा। जाति आनुवंशिकता पर निर्भर रहता है पर वर्ग व्यक्तिगत उपलब्धियों पर।

(ii) जाति का आधार धर्म है पर वर्गों का आधार धर्म नहीं। उत्पत्ति की दृष्टि से वर्ग धर्म निरपेक्ष है पर जाति ईश्वर की देन है, ऐसा माना जाता है। जातियों का निर्माण ईश्वर ने किया है तथा प्रत्येक जाति का अपना पृथक धर्म होता है।

P.T.O.

कई ऐसे पैतृक व्यवसाय चली आ रही है जो
प्राचीनकाल से चली आ रही है, इसके कुछ गुण है जो वर्तमानकाल में
प्रभावित होते हैं यह भी चली आ रही है,

(i) जाति हर व्यक्ति को एक निश्चित सामा-
जिक व्यवस्था प्रदान करती है जो उसे निश्चित रूप से
प्राप्त कराती है, उसके जीवन में सुविधाएं मिल जाती हैं,

(ii) यह जाति व्यक्ति के सदस्यों में सहानुभूति
की भावना उत्पन्न करती है जिससे उस जाति के गरीब
तथा गरीब पीड़ित परिवार को सहायता मिलती है,

(iii) जाति व्यवस्था से व्यक्तियों को आर्थिक
सुरक्षा मिल जाती है, हर जाति का एक निश्चित व्यवसाय
होता है जिससे उस जाति के सदस्यों को उससे
सम्बन्धित व्यवसाय की सुविधाएं प्राप्त होती हैं,

(iv) जाति व्यवस्था का प्रचलन, व्यवहार,
तथा विश्वासों आदि कुशलता एक जाति के एक पीढ़ी के
लोगों से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है,

जाति व्यवस्था के कुछ दोष निम्न हैं:—

(i) यह जाति व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष यह है कि इससे
समाज की गतिशीलता ही समाप्त हो जाती है क्योंकि
व्यक्ति का जन्म जाति में सम्बन्धित व्यवसाय ही करे तो
किसी जाति का जन्म होती दूसरे सामाजिक व्यक्ति वंचित
रह जाते हैं।

(ii) जाति व्यवस्था से दूसरे जाति में छुआछूत एवं
द्वेष उत्पन्न हो जाता है, छुआ-छूत की भावना जाति-
व्यवस्था की ही देन है,

(iii) जाति व्यवस्था ने हिन्दू समाज की एकता को
खंडित किया है, एक जाति को दूसरे जाति से घृणा उत्पन्न
उत्पन्न का दूसरा कारण बनाते।

(iv) ... राष्ट्रीय एकता ...

ਜਿਵੇਂ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ ਤੋਂ 36 ਜਾਤੀ ਸਮੂਹਾਂ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਮਿਲਦਾ ਹੈ, ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦ ਕਿਸੇ ਜਾਤੀ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਦੁਆਰਾ ਜਾਤੀ ਦੇ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਨਿਯਮਾਂ ਦਾ ਉਲੰਘਣ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਮੈਂਬਰਾਂ ਦੁਆਰਾ ਜਾਤੀ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਵੀ ਕੱਢਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ।

(iii) ਜਾਤੀ ਅੰਤਰਵਿਆਹੀ (Endogamous) ਵਿਵਸਥਾ ਹੈ। ਜਾਤੀ ਵਿਵਸਥਾ ਦੇ ਅੰਤਰਗਤ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਦਾ ਚੁਣਾਵ ਆਪਣੀ ਹੀ ਜਾਤੀ ਤੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਗਰ ਕੋਈ ਅੰਤਰਜਾਤੀ ਵਿਆਹ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਸਜ਼ਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਜਾਤੀ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਵੀ ਕੱਢਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਅੱਜ ਕੱਲ੍ਹ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਇੰਨੀ ਕਠੋਰਤਾ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਆਰਥਿਕ ਪਰਿਵਰਤਨ, ਸਮਾਜਿਕ ਪਰਿਵਰਤਨ ਦੇ ਕਾਰਨ ਅਤੇ ਪੱਛਮੀ ਸਿੱਖਿਆ, ਆਧੁਨਿਕਤਾ ਦੇ ਨਾਲ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਚੇਤਨਾ ਆਉਣ ਕਾਰਨ ਸਮਾਜ ਹੁਣ ਇਸ ਨੂੰ ਮਾੜਾ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦਾ।

(iv) ਜਾਤੀ ਤੋਂ ਜਾਤੀ ਵਿਚ ਖਾਣ-ਪੀਣ ਸੰਬੰਧੀ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਾਤੀ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਭੋਜਨ ਕਰਨਾ ਮਨ੍ਹਾ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

(v) ਪ੍ਰਤੀਕ ਜਾਤੀ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀ ਪਹਿਲਾਂ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਪਰ ਅੱਜ ਕੱਲ੍ਹ ਦੀ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀ ਪਹਿਲਾਂ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ।

ਜਾਤੀ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਕੁਝ ਗੁਣ ਅਤੇ ਦੋਸ਼ ਪਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਆਧੁਨਿਕ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਦੇਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਜਾਤੀ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਪਾਏ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਗੁਣਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਇਸ ਦੇ ਦੋਸ਼ ਵੀ ਪਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ ਸਮਾਜ

जिसका कारण प्रतिभागियों में अन्तर्जातीय की भावना प्रभावित है जिसका प्रकार से ध्यान पूर्वक है।

(4) संस्कृति आनुवंशिक है, अर्थात् किसी संस्कृति का करने के लिए उसी समाज के सदस्यों को कठिन परिश्रम करना पड़ता है और किसी भी समाज के सदस्यों को आत्मसात करना होता है क्योंकि उसके पीछे जो परम्परा है उसे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित करना ही संस्कृति का उद्देश्य है। और क्रमबद्धता है।

संस्कृतिकरण भारतीय विरोधी है क्योंकि समाज में हर व्यक्ति को समान दर्जा और अधिकार प्राप्त होता है। अतः संस्कृतिकरण समानता पर आधारित है।

अतः संस्कृतिकरण की मुख्य विशेषताएँ हैं अवलोकन किया जाए तो आरम्भ में ब्राह्मणों का उनमें अन्धविश्वास दोष का प्रभाव पड़ा। यही कारण है कि अनेक धार्मिक कुरीतियों ने जन्म अन्धविश्वासों व छुआ-छूत की भावना को समाप्त करने तथा जनसाधारण में अनेक विरोधी विचार उभरे उसी समय से प्रसार करना आरम्भ हुआ, इसी कारण से भारतीय समाज में संस्कृतिकरण का प्रसार किया गया पर इन प्रयासों के बावजूद भी भारतीय समाज संस्कृतिकरण से प्रभावित हुआ है। समाज भावना समाप्त न होकर की मिलती है।

जबकि भारतीय समाज में आन्तरिक परिवर्तन या आत्म परिवर्तन नहीं होता बल्कि बाहरी में कोई परिवर्तन नहीं होता था।